आकार अलग-अलग, पर असलियत एक

भगवान को कैसे पहचानना ? भगवान छोटी चीज नहीं है। इसलिए किसीकी पकड़ में नहीं आता। छोटा होता तो पकड़ में आ जाता। आपने हाथी देखा है ? एक बार एक हाथी को चार अन्धे टटोलने लगे। एक ने पाँव टटोला तो कहा, हाथी याने खंबा है। दूसरे ने कान छुआ और बोला, हाथी याने पंखा है। अन्धों के हाथ में एक-एक हिस्सा आ गया, तब भी वे उसे नहीं पहचान सके। फिर परमेश्वर तो बहुत बड़ा है। कोई कितनी भी कोशिश करें तो भी उसे वह पहचान नहीं सकता। भगवान के जो अलग-अलग गुण हैं, उन्हें ध्यान में लेकर ही अलग-अलग धर्म बने हैं। उनके अनन्त गुण हैं। किसीने एक पर ध्यान दिया, किसीने दूसरे पर। इसीसे तरह-तरह की प्रथाएँ चालू हुईं। आज हम एक हरिजन के पास गये थे। हमने उससे पूछा, तुम भगवान का नाम क्या लेते हो ? उसने कहा, राम, कृष्ण। परमेश्वर के नाम अनन्त हैं। कुरानशरीफ में आता है कि पैगम्बर दो नाम लेते थे—अल्लाह और रहमान। किसीने उनसे पूछा : "आप दोनों नाम लेते हैं तो अल्लाह का असली नाम कौन सा है ?" तब पैगम्बर ने जवाब दिया : "अरे, जो अल्लाह है वही रहमान है और जो रहमान है, वही अल्लाह है।" जो नारायण है, वही गोविंद है और जो गोविन्द है, वही नारायण है। बुद्ध है, वही सिद्ध है और सिद्ध है, वही बुद्ध है। जो विष्णु है, वही शंकर है और जो शंकर है, वही विष्णु है। लेकिन किसीको यह रूप खींचता है, किसीको वह रूप खींचता है। इस लड़की ने हरा कपड़ा पहना है, उसने नीला, लेकिन दोनों एक ही चेतन हैं। हमें बचपन में पिताजी कपड़े की दूकान में ले गये थे। उस समय मेरी उम्र लगभग ९, १० साल की होगी। दूकान में छपाई के अलग-अलग रंग थे। पिताजी पूछते थे, क्यों यह रंग अच्छा है ? मैं 'हाँ' कहता था। आठ या दस आने गज का कपड़ा होगा। आखिर वे ही तय करते थे। बीच-बीच में मुझे इस तरह पूछते थे। मैं 'हाँ' 'हाँ' कहता था। आखिर प्रश्न खत्म हुए और हम पिताजी के पंजे से छूटकर घूमने चले गये। मतलब कपड़े के अलग-अलग रंग होते हैं। हरएक की पसन्द अलग-अलग होती है। वैसे ही किसका नाम लेना, यह अपना-अपना जायका होता है। खोआ, शक्कर एक ही होती है, लेकिन पेड़ा, बर्फी आदि मिठाई अलग-अलग प्रकार की होती है। चीज एक ही होती है। लेकिन शकल में फर्क होता है। किसीको लड्डू पसन्द है, किसीको पेड़ा। आकार अलग-अलग हैं। अन्दर की चीज एक ही है। असलियत एक ही है। यह खयाल होना चाहिए।

इस तरह अंदर की एकता महसूस कर, सारे गाँव को परिवार मानकर गाँव की सेवा करनी चाहिए। सिर्फ घर की सेवा नहीं करनी चाहिए। सबकी सेवा में घर की सेवा आ ही जाती है। हम सबकी सेवा करते हैं तो अपनी भी करते ही हैं। घर की भी करते हैं। इसलिए सारा गाँव अपना ही एक परिवार है, यह भावना करके सोचना, काम करना चाहिए।

बड़ों के झगड़े में नहीं पड़ें

इन दिनों एक नयी खतरनाक बात निकली है—अलग-अलग पार्टियों के खयाल। मुझे तो उनके नाम भी याद नहीं रहते। क्या भगवान के नाम हैं जो याद रखूँ ? पार्टी याने क्या ? गाँव को आग लगानेवाली, गाँव में झगड़ा करानेवाली, गाँव के टुकड़े करानेवाली। गाँवको आग क्यों लगानी चाहिए ? गाँववाले का यह काम है कि गांव के टुकड़े न होने दें। वे उन पार्टीवालों से कह दें कि तुम हमारे गाँव में झगड़ा क्यों लाते हो ? आग क्यों लगाते हो ? तुम हमारे गाँव में मत आओ। ये सारे बड़े लोगों के झगड़े हैं। इसके बीच में छोटों को तबाह होना पड़ता है। यहाँ आना है तो प्रेम की बात करनी होगी। इस तरह उनको समझायेंगे। ये झगड़े सिर्फ-जम्मू, कश्मीर में ही नहीं, बल्कि भारत में भी हैं। पाकिस्तान, लंका आदि दूसरी जगहों में भी हैं। आज अखबार का पहला पन्ना खोलिये। मारपीट, डाँट, लूट, हत्या, ऐसी खबरें रहती हैं। हमें तो तय करना चाहिए कि बड़ों के झगड़े में हम नहीं पड़ेंगे। (बच्चों को यह राग में गाने के लिए कहा। बच्चों ने तीन बार गाया कि हम बड़ों के झगड़े में नहीं पड़ेंगे।)

बच्चों की जबान से जो शब्द निकलता है, वह भगवान का शब्द होता है। हम इस सभा में यह प्रस्ताव पास करते हैं।

गोकुल की बात है। भगवान कृष्ण छोटे थे। एक शख्स ने गोकुल को आग लगा दी। भागवत में वर्णन है, जैसा हम पानी पीते हैं, वैसे भगवान कृष्ण वह आग पी गये। आग लगानेवाले पहले भी थे। आज भी हैं। लेकिन आज आग पीनेवाले कहाँ हैं ? इस वास्ते उन पार्टीवालों को यह कह दो कि आज आग पीनेवाले भगवान नहीं हैं। इसलिए आप हमारे गाँव में आग मत लगाइये। हमें एहतियाती से, सावधानी से रहना चाहिए। नहीं तो चोर आयेगा। गाड़ी में यही लिखा रहता है : एहतियात से रहो, सावधानी से रहो।

मैं आपको कहना चाहता हूँ कि गाँव में जाओगे तो यही कहते-कहते जाइये। अभी बच्चों ने गाया, वैसे आप भी गाइये। कुल गाँव को एक बनाओ। गाँव में कभी फूट नहीं पड़ेगी। हम गाँव को एक परिवार बनायेंगे, मजबूत बनायेंगे। तो हमारे गाँव में फूट नहीं पड़नी चाहिए, यह फिक्र रखनी होगी। मैं दान माँगता हूँ। भूदान से दिल एक होते हैं। दिल को जोड़ने के लिए, जाति के झगड़े, धर्म के झगड़े, स्वार्थ के झगड़े, पार्टियों के झगड़े मिटाने के लिए यह हमारा काम चल रहा है।

हमारा कहना यही है कि शांतिसेना का काम गाँव में बने। गाँव की सेवा के लिए सेवक बाहर आयें। जातिभेद, पक्षभेद, धर्मभेद सब मिटा दें—यही बाबा की बात है। ◆◆◆

अनुक्रम

१. इल्म, अमल और मुहब्बत से ही काम होता है
अच्छाबल १९ जुलाई '५९ पृष्ठ ७५९
२. जातिभेद, पक्षभेद और धर्मभेद मिटाकर सहयोगी समाज बनाइये
पनाला २७ मई '५९ ,, ७६१

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी
www.vinoba.in